Blueprint:
Rohilkhand ki Qawwali Parampara -

Blueprint for **" Rohilkhand ki Qawwali Parampara-"** under the Scheme Safeguarding the Intangible Cultural Heritage and Diverse Cultural Traditions of India, sanctioned under Sanction : **File No. 28-6/ICH-Scheme/96/2015-16 29 Jan2016**

1. INTRODUCTION

" Rohilkhand ki Qawwali Parampara-"

वर्तमान उत्तर प्रदेश के मध्य भू -भाग में स्थित रुहेलखण्ड नगर, शहर और गांवों से बना एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जिसका सदियों से अपना राजनैतिक ,आर्थिक और सांस्कृतिक महत्व रहा है, उत्तर प्रदेश के अंतर्गत आने वाले रुहेलखण्ड क्षेत्र में मुरादाबाद ,रामपुर,बरेली ,बदायूँ ,पीलीभीत तथा शाहजहाँपुर जनपद आते हैं । अमरोहा (ज्योति बा फूले नगर)जो पहले मुरादाबाद जनपद का हिस्सा था अब एक एक अलग जपद है, और रुहेलखंड का एक हिस्सा भी.

मध्य काल में सन 1200 के आस -पास रुहेलखंड का नाम कटेहर था। कठेहर के अन्तर्गत वर्तमान रुहेलखण्ड का लगभग पूरा क्षेत्र आता था. शाहजहाँपुर गजेटियर के अनुसार -- रुहेलखण्ड का पूर्वी भाग वाछिल राजपूतों के आधिपत्य में था जब तक कि सन् 1174 में कठेरिया राजपूतों ने यहाँ अपना आधिपत्य स्थापित नहीं कर लिया। इससे अनुमान होता है कि 1174-75 ई० से वर्तमान रुहेलखण्ड क्षेत्र पर कठेहरों का आधिपत्य स्थापित हुआ ।

1200 ई० तक इस क्षेत्र में मुस्लिम शक्तियां सक्रिय हो चुकी थी। 1196 ई० में महमूद गौरी की प्रेरणा से कुतुबद्दीन ऐवक ने वर्तमान मुरादाबाद जिले के सम्भल तथा बदायूँ जिले के बदायूँ नगर पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया था।इस प्रकार मुस्लिम शक्तियों ने 13 बीं श० ई० तक इस पूरे रुहेलखण्ड क्षेत्र से कठेहरों को पराजित करके अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया तथा अंग्रेजों के भारत में शासन से पूर्व तक यह क्षेत्र मुस्लिम शक्तियां के अधीन रहा।18 बीं शताब्दी के प्रारम्भ में औरंगजेब की मृत्यु के बाद दिल्ली के मुगल शासक कमजोर हो गये तथा अपने राज्य के जमींदारों , जागीरदारों आदि पर उनका नियन्त्रण घटने

लगा। उस समय इस कठेर क्षेत्र में भी अराजकता फैल गयी तथा यहाँ के जमींदार स्वतन्त्र हो गये।

इसी समय रुहेला पठानों ने कठेर क्षेत्र (वर्तमान रुहेलखण्ड)में प्रवेश किया। यह लोग अफगानिस्तान में रोह नामक क्षेत्र से आये थे , इनके बारे में उर्दू फारसी की अनेक पुस्तकों में लिखा है। यह लोग रोह नामक क्षेत्र से आये थे अत: यहाँ इनको रुहेला पठान कहा गया। इनके आदि पुरुष दाऊद खाँ थे जो 1707 ई० में रोह से इस कठेर क्षेत्र में आये ।इस प्रकार दाऊद खाँ के इस कठेर क्षेत्र पर आधिपत्य स्थापित करने के बाद उनके अन्य उत्तराधिकारियों ने यहाँ शासन किया तथा रुहेलों द्वारा इस क्षेत्र पर शासन करने के परिणामस्वरुप 1730 ई० से यह क्षेत्र (जो पूर्व में कठेर था) "रुहेलखण्ड" के नाम से जाना जाने लगा।मध्य काल में यह क्षेत्र हिमालय की तराई से लेकर चम्बल नदी तक फैला हुआ था। अंग्रेजों के काल में इसे रुहेलखण्ड कमिश्नरी कहा जाता था.

आज उत्तर भारत में यह हिन्दू - मुस्लिम संस्कृति का एक केंद्र है, यही कारण है की यहां की कलाओं में दोनों संस्कृतियों का मिश्रण मिलता है , जिस कारण **रुहेलखण्ड का** भारतीय संस्कृति के विकास एवं संवर्धन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है । पारम्परिक धर्म ,त्योहार , पर्व ,उत्सव , रीति-रिवाज,मान्यतायें,विश्वास लोक गीत,लोक नृत्य और लोक संगीत आदि में यहां एक स्थानीय रंग है ।

रुहेलखंड में कव्वाली का आगाज मुस्लिम धर्म के सूफ़ी पीर-फ़कीरों ने किया था ।कव्वाली की शुरूआत ईरान में आठवीं और नवीं शताब्दी में हुयी ।आठवीं और नवीं शताब्दियों में ईरान और अन्य मुस्लिम देशों में धार्मिक महफ़िलों का आयोजन किया जाता था जिसे “समाँ” कहा जाता था । “समाँ” का आयोजन धार्मिक विद्वानों (शेख) की देख-रेख में होता था । “समाँ” का उद्देश्य संगीत/कव्वाली के माध्यम से ईश्वर के साथ सम्बन्ध स्थापित करना होता था.

मध्यकाल में कव्वाली सूफियों के सांथ भारत आई और फिर जब रुहेलखंड में मुस्लिम शासकों का अधिकार हो गया तो 1250 के आस पास यह रहस्यवाद की गायन परम्परा भी रुहेलखंड के क्षेत्र में आ कर यहां की संस्कृति में समा गई.

मध्यकाल में रुहेलखंड में सूफी खानकाहे बनने लगी और रुहेलखंड में कव्वाली के रंग जमने लगे जहां रहस्यवाद आंतरिक तलाश और सर्वशक्तिमान से सीधा सम्पर्क स्थापित करने का माध्यम बना. रुहेलखंड की कुछ प्रसिद्ध मज़ार और सूफी खानकाहे इस प्रकार हैं, जिनमे कव्वाली गायन को आश्रय मिला-

मजारे आला हजरत (बरेली)

हज़रत जमाल उल्लाह कादरी का मज़ार शरीफ (रामपुर)

हज़रत शाह महबूबे इलाही का मज़ार शरीफ (रामपुर)

हज़रत अब्दुल्लाह शाह बगदादी का मज़ार शरीफ (रामपुर)

हज़रत शाह बुलाकी साहब की ज़ारत (मुरादाबाद)

हाफिज साहब का मजार मुरादाबाद

हज़रत सुल्तान आफरीन साहब (बड़े सरकार) की ज़ारत (बदायूँ)

हज़रत बदरुद्दीन शाह (छोटे सरकार) की ज़ारत (बदायूँ)

नसरूद्दीन साहिब की मजार, दरगाह भूरे शाह और मजार शाह विजयत साहिब अमरोहा

शाहजी मियां का मजार –**पीलीभीत**

रुहेलखंड में इन मजारों और सूफी खानकाहे के आस पास से ही कव्वाली निकली जो आज भी अपनी परम्परांओं के सांथ ज़िंदा है.

यह शोध कार्य रोहिलखण्ड क्षेत्र में कव्वाली परपरा के इतिहास ,संरचना ,गायन शैली और वर्तमान स्वरूप को समझने की एक कोशिश है.

It is very important to study the traditional art form of Qawaali to understand Indian culture. Qawwali is an integral part of the history of human foundation. All traditional forms of ' Qawaali' are of great value in Rohilkhand .Hence, the main purpose of this documentary is to document the tradition of 'Qawaali which would help in understanding the Indian culture.

2. OBJECTIVE

To study, research and document the tradition of **" Rohilkhand ki Qawwali Parampara-"** through a documentary film.

3. IMPLIMENTATION

Step 1: Field research, survey, interviews with artists, Qawwali singer,historians and locals.

Step 2: Script writing of documentary film.

Step3: Shooting of the documentary.

4. LOCALE

We will research and shoot in following District of " Rohilkhand Uttar Pradesh –

Pilibhit district

Bareilly district

Budaun district

Rampur district

Moradabad district

and

Shahjahanpur district

5 DATES

Research Work will commence from 1st May 2016 to 31St July 2016.

Shooting of the documentary will commence from 16 August 2016.

Editing and post production: Oct.- Nov. 2016

6 CONCLUSION

After the completion of the 60 min. documentary film, we shall submit the DVD to 'Sangeet Natak Academy'.

Dr Ahsan Bakhsh
C/o Iqbal brothers
Main market
Pithorgarah
Uttarakhand
Pin-262501
Mobile no:9869089403